P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE-IX* December- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययनः टिहरी गढ़वाल के सन्दर्भ में

भरत सिंह असवाल
अतिथि प्रवक्ता,
शिक्षा विभाग,
हे0न0ब0ग0 विश्वविद्यालय,
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
एस0 आर0 टी0 परिसर,
बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल।

सारांश

अध्यापक को राष्ट्र निर्माता, मानव जाति का प्रकाश स्तम्भ कहा जाता है। उसी पर विद्यालय, ग्राम, राष्ट्र, समाज और मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है । हमारे समाज का प्रत्येक वर्ग चाहे वह शिक्षक हो या अभिभावक, अधिकारी हो या कर्मचारी सभी मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे हैं उनमें मूल्य अन्तर्द्वन्द द्रष्टिगोचर हो रहा है। परम्परागत संस्कार खत्म होते जा रहे हैं मनुष्य अनपढ़ हो या शिक्षित, मूल्य दोनों की आवश्यकता है क्योंकि मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा व दशा प्रदान करते है। शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिससे सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा सशक्त साधन बन सके। प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल जनपद के 36 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा 20 अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की वर्तमान स्थिति को जानने पर सम्पादित किया गया है। माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक मूल्यो को ज्ञात करने के लिए डॉ0 एस0 पी0 अहूवालियाँ (1980) द्वारा प्रमापीकृत ''टीचर्स वैल्यूज इन्वैन्ट्री'' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मूल्यों में मध्यमान के आधार पर अन्तर ज्ञात किया गया।

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में सामाजिक मूल्यों एवं राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया तथा शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओ के मध्य क्रमशः आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्य में 99 प्रतिशत स्तर तक सार्थक अन्तर पाया गया जबकि शासकीय एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मध्य क्रमशः सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मध्य सभी छः मूल्यों (मध्यमान के पदों में) पर अन्तर विद्यमान है किन्तु वह सार्थक नहीं है।

मुख्य शब्द : अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य और राजनैतिक मूल्य ।

प्रस्तावना

अध्यापक को राष्ट्र निर्माता, मानव जाति का प्रकाश स्तम्भ कहा जाता है। उसी पर विद्यालय, ग्राम, राष्ट्र, समाज और मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिस प्रकार से समाज में सभी व्यक्तियों का अपना एक स्थान है उसी प्रकार से अध्यापक भी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसे हम किसी भी स्थिति में नकार नहीं सकते। समाज में व्याप्त हर स्थिति तथा समाज में होने वाली हर घटना का अध्यापक पर सीधा प्रभाव पडता है।

समस्या की उत्पत्ति

हमारे समाज का प्रत्येक वर्ग चाहे वह शिक्षक हो या अभिभावक, अधिकारी हो या कर्मचारी सभी मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे हैं उनमें मूल्य

अन्तर्द्वन्द द्रष्टिगोचर हो रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की गई कि जीवन के लिये आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। यह स्थिति समाज व राष्ट्र के लिये शुभ नहीं है। परम्परागत संस्कार खत्म होते जा रहे हैं मनुष्य अनपढ हो या शिक्षित, मूल्य दोनों की आवश्यकता है क्योंकि मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा व दशा प्रदान करते है। शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिससे सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा सशक्त साधन बन सके। निःसन्देह विद्यार्थियों में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित करने के लिये शिक्षकों को तैयार करना पड़ेगा यदि हमारे शिक्षक ऐसे मूल्यों से युक्त होंगे तभी वे सशक्त हो सकेंगे और अपने विद्यार्थियों में मूल्यों का प्रस्फुटन कर सकेंगे। प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल जनपद के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों कें मूल्यों के स्तर की वस्तुस्थिति को जानने हेतु पुनरावलोकन कतिपय शोध अध्ययन सन्दर्भित किये जा रहे हैं। नेलसन (1971) ने यू० एस० ए० में शारीरिक शिक्षकों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया तथा पाया कि पुरुष शिक्षकों ने सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों को महत्व दिया जबकि महिला शिक्षकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्य पर अधिक महत्व दिया । डेविड, वांग (1979) ने एक ही वर्ग के अध्यापकों के मूल्यों एवं नेतृत्व के सन्दर्भ में अध्ययन किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया के बाईबिल ह्यूमिनिटीज, साईन्स तथा वोकेशनल अध्यापक मूल्यों पर विभिन्नता रखतें है। महिला वर्ग की अध्यापिकायें सौन्दर्यात्मक एवं सामाजिक मूल्यों पर उच्चतम तथा सैद्धान्तिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर निम्न पायी गयी। सिंह एवं कुमार (2008) ने माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के जीवन –मूल्यों (धार्मिक मूल्य, सामजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, बौद्धिक मूल्य एवं स्वास्थ्य मूल्य) का तुलनात्मक अध्ययन कर पाया कि विभिन्न मूल्य के सन्दर्भ मे छात्र–छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, सम्भवतः छात्र एवं छात्राओं का समान परिवेश एवं समान अधिकार प्राप्त होने से यह परिणाम प्राप्त हुये है। सिंह एवं दुबे (2010) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के मूल्य प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन कर मूल्य प्रतिमानों के निम्न परिणाम एवं निष्कर्ष प्राप्त किये माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है तथा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं के धार्मिक मूल्यों, राजनैतिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों तथा सुखवादी मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। चतुर्वेदी (2012) ने प्राथमिक स्तरीय अध्यापकों के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर पाया कि परिषदीय स्कूल के अध्यापकों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल के अध्यापकों की अपेक्षा सैद्धान्तिक मूल्यों की अधिकता है। परिषदीय शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्यों की अधिकता पाई गई जबकि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया। शर्मा एवं सोनी (2013) ने ''स्नातक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यो'' का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी छात्रों के जीवन मूल्यों के विभिन्न आयामों में सौन्दर्यात्मक मूल्य के अतिरिक्त अन्तर नहीं पाया जाता है, उनमें लगभग समानता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी क्रिया को करने का एक लक्ष्य अथवा उद्देश्य किसी कार्य का अन्तिम बिन्दू है जहां तक पहुंचने का सतत् प्रयास किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य के निम्न उद्देश्य हैं –

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों कें विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं कें विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का विभिन्न मूल्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रस्तुत समस्या के समाधान हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं कें विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल के टिहरी जनपद को समस्या के अध्ययन क्षेत्र हेतु 09 विकास खण्ड़ों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं कें मूल्यों में केवल 06 मूल्यों के सन्दर्भ में क्रमशः सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों को ही अध्ययन हेतु सीमित किया गया है।

शोध प्रक्रिया

शोधार्थी ने आदर्श मूलक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्शन

उत्तराखण्ड में 13 जनपद हैं, जिसमें एक टिहरी जनपद है। शोधार्थी ने लॉटरी पद्धति का प्रयोग करके आकस्मिक न्यादर्शन तकनीकी से 56 विद्यालयों का चयन किया और इन विद्यालयों में से मात्र 36 शासकीय माध्यमिक विद्यालय तथा 20 अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय का न्यादर्शन ही शोधार्थी को उपलब्ध हो पाया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में एस0 पी0 आहलुवालिया द्वारा विकसित ''टीचर्स वैल्यू इन्वैन्ट्री'' का प्रयोग किया गया परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अर्ध–विच्छेदन विधि द्वारा ज्ञात किया गया परीक्षण पूर्णतः वैध व प्रमाणिक है। जिसमें अध्यापकों के छः मूल्यों सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का मापन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक

सारिणी आंकड़ों पर सांख्यिकी तकनीकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान की गणना की गयी। उसके बाद परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

सारणी संख्या–01

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का विभिन्न मूल्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक विवरण

(मध्यमान, मानक विचलन एवं t–मान के पदों में)

क्रं0 सं0	विभिन्न मूल्य	शासकीय अध्यापक (N=333)		अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापक (N=213)		M1~M2	t-मान	सार्थकता स्तर
		M_1	SD_1	M_2	SD_2			
1.	सैद्धान्तिक मूल्य	74.80	14.86	74.13	17.08	0.67	0.46	N.S
2.	आर्थिक मूल्य	93.09	14.8	91.36	14.3	1.73	1.36	N.S
3.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	95.58	16.58	94.96	15.74	0.62	0.31	N.S
4.	सामाजिक मूल्य	65.38	14.86	70.98	15.7	5.6	4.15	0.01
5.	राजनैतिक मूल्य	97.44	14.4	92.43	17.04	5.01	3.55	0.01
6.	धार्मिक मूल्य	91.44	19.57	89.34	17.77	2.1	1.29	N.S

df = 544 पर t – मान 0.05 सार्थकता स्तर पर = 1.96 0.01 सार्थकता स्तर पर = 2.58

प्रस्तुत उपरोक्त सारणी संख्या–01 में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों की तुलना निम्नवत् की गयी है–शासकीय अध्यापक एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापकों में व्याप्त मूल्यों के मध्यमान में अन्तर की गणना जब t–मान के सन्दर्भ में की गई तो उनमें से मात्र सामाजिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्यों पर t–मान क्रमशः 4.15 तथा 3.55 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सारणी के मानक मूल्य t–मान 2.58 की तुलना में बहुत अधिक है अर्थात् 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया जबकि अन्य मूल्यों पर प्राप्त प्राप्त t–मान क्रमशः 0.46, 1.36, 0.31 व 1.29 है जो कि 0.05 स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 1.96 की तुलना में बहुत कम है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्यपरिकल्पना संख्या–01 ''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,'' अध्यापकों के सन्दर्भ में परिक्षित करने पर सामाजिक मूल्यों एवं राजनैतिक मूल्यों पर निरस्त की जाती है तथा अन्य मूल्यों पर स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या–02

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं का विभिन्न मूल्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक विवरण

(मध्यमान, मानक विचलन एवं t–मान के पदों में)

क्रं0 सं0	विभिन्न मूल्य	शासकीय अध्यापिकाऐं (N=103)		अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापिकाऐं (N=87)		M1~M2	t-मान	सार्थकता स्तर
		M1	SD1	M2	SD2			
1.	सैद्धान्तिक मूल्य	76.73	14.77	75.99	16.49	0.74	0.32	N.S
2.	आर्थिक मूल्य	95.47	14.25	74.39	16.36	21.08	9.38	0.01
3.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	89.64	16.18	84.95	17.3	4.59	1.91	N.S
4.	सामाजिक मूल्य	68.19	15.45	79.9	18.86	11.71	4.62	0.01

5.	राजनैतिक मूल्य	99.94	15.51	90.24	15.59	9.7	4.29	0.01
6.	धार्मिक मूल्य	88.57	20.02	85.41	15.43	3.16	0.29	N.S

df=188 पर t – मान 0.05 सार्थकता स्तर पर = 1.96 0.01सार्थकता स्तर पर = 2.58

प्रस्तुत उपरोक्त सारणी संख्या–02 में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं में व्याप्त विभिन्न मूल्यों में पारस्परिक अन्तर का आंकलन करने हेतु जब t–मान की गणना की गई तो t–मान क्रमशः आर्थिक मूल्य पर 9.38, सामाजिक मूल्य पर 4.62 एवं राजनैतिक मूल्य पर 4.29 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 2.58 की तुलना में बहुत अधिक है, अर्थात् 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर विद्यमान है जबकि दोनों प्रकार के शासकीय एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयो में कार्यरत अध्यापिकाओ में सैद्धान्तिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं धार्मिक मूल्यों पर प्राप्त t–मान क्रमशः 0.32, 1.91 व 0.29 है जो कि 0.05 स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 1.96 की तुलना में बहुत कम है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शोधार्थी द्वारा प्रथम उद्देश्य के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना संख्या–02 ''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों तथा अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,'' अध्यापिकाओं के सन्दर्भ में मात्र सामाजिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्यों पर निरस्त होती है जबकि अन्य तीन मूल्यों यथा–सैद्धान्तिक, धार्मिक तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य पर स्वीकृत की जाती है।

सारणी संख्या – 03
शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक विवरण (मध्यमान, मानक विचलन व t-मान के पदों में)

कं0 सं0	विभिन्न मूल्य	शासकीय अध्यापक (N=333)		शासकीय अध्यापिकाओं (N=103)		M1~ M2	t- मान	सार्थकता स्तर
		M1	SD1	M2	SD2			
1.	सैद्धान्तिक मूल्य	74.8	14.86	76.73	14.77	1.93	0.69	N.S
2.	आर्थिक मूल्य	93.09	14.8	95.47	14.25	2.38	0.90	N.S
3.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	95.58	16.58	89.64	16.18	5.94	1.76	N.S
4.	सामाजिक मूल्य	65.38	14.86	68.19	15.45	2.81	0.94	N.S
5.	राजनैतिक मूल्य	97.44	14.4	99.94	15.51	2.5	0.84	N.S
6.	धार्मिक मूल्य	91.44	19.57	88.57	20.02	2.87	0.56	N.S

df=434 पर t –मान 0.05 सार्थकता स्तर पर =1.96 0.01 सार्थकता स्तर पर =2.58

उपरोक्त तालिका सारणी संख्या–03 के अवलोकन से विदित होता है कि – विभिन्न मूल्यों के अन्तर की गणना जब t–मान के आधार पर की गई तो माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शासकीय अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों में प्राप्त t–मान क्रमशः सैद्धान्तिक मूल्य पर 0.69, आर्थिक मूल्य 0.90, सौन्दर्यात्मक मूल्य 1.76, राजनैतिक मूल्य 0.84 तथा सामाजिक मूल्य पर 0.94 एवं धार्मिक मूल्यों पर 0.56 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सारणी के मानक मूल्य 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.58 से काफी कम पाया गया अर्थात् 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना संख्या–03 ''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,''परिकल्पना संख्या–03 स्वीकृत की जाती है।

सारणी संख्या–04
अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक विवरण (मध्यमान, मानक विचलन व t - मान के पदों में)

कं0 सं0	विभिन्न मूल्य	अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापकों (N=213)		अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापिकाओं (N=87)		M1~M2	t- मान	सार्थकता स्तर
		M1	SD1	M2	SD2			
1.	सैद्धान्तिक मूल्य	74.13	17.08	75.99	16.49	1.86	0.02	N.S
2.	आर्थिक मूल्य	91.36	14.3	74.39	16.36	16.97	0.16	N.S
3.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	94.96	15.74	84.95	17.3	10.01	0.07	N.S
4.	समाजिक मूल्य	70.98	15.7	79.9	18.86	8.92	0.09	N.S
5.	राजनैतिक मूल्य	92.43	17.04	90.24	15.59	2.19	0.16	N.S
6.	धार्मिक मूल्य	89.34	17.77	85.41	15.43	3.93	0.03	N.S

df = 298 t–मान 0.05 सार्थकता स्तर पर =1.96 0.01 सार्थकता स्तर पर =2.58

उपरोक्त सारणी संख्या–04 के अवलोकन से विदित होता है कि–विभिन्न मूल्यों के अन्तर की गणना जब t-मान के आधार पर की गई तो यह अन्तर अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यो के सन्दर्भ में यह सार्थक नहीं पाया गया यह अन्तर t–मान सारणी के मानक मूल्य (0.05 सार्थकता स्तर पर t–मान 1.96) से बहुत कम पाया गया। जो यह प्रदर्षित करता है कि अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मध्य किसी भी मूल्य पर क्रमशः सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सभी छः मूल्यों पर स्थिति एक जैसी पायी गयी। अशासकीय मान्यता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मध्य सभी छः मूल्यों में अन्तर (मध्यमान के पदों में) तो पाया गया है किन्तु वह 0.05 (95 प्रतिशत) स्तर पर भी सार्थक नहीं प्राप्त हुआ इससे यह कहा जा सकता है कि यद्यपि वित्त विहीन विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में सभी छः मूल्यों पर अन्तर विद्यमान है किन्तु वह सार्थक नहीं है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना संख्या–04 ''अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,'' परिकल्पना संख्या –04 स्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष

उपरोक्त सारणी संख्याओं से प्राप्त निष्कर्ष निम्न है–

1. 99 प्रतिशत स्तर से अधिक शासकीय एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापकों में सामाजिक मूल्यों एवं राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि शासकीय एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त अध्यापकों के मध्य 95 प्रतिशत स्तर तक सैद्धान्तिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, सौन्दर्यात्मक मूल्यों तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. शासकीय एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त विद्यालयों की अध्यापिकाओ के मध्य क्रमशः आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्य में 99 प्रतिशत स्तर तक सार्थक अन्तर पाया गया जबकि शेष तीन मूल्यों में सैद्धान्तिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं धार्मिक मूल्यों में 95 प्रतिशत स्तर तक भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. 99 प्रतिशत विश्वास स्तर पर यह कहा जा सकता है किदोनों ही प्रकार के विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मध्य क्रमशः सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सभी छः मूल्यों पर शासकीय अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की स्थिति एक जैसी पायी गयी।

सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य में निष्कर्ष उपरान्त कुछ सुझाव इस प्रकार है–

1. अध्यापकों को चाहिए कि वे अपने व्याक्तित्व में विभिन्न मूल्यों को विकसित करें, समाहित करें क्योंकि छात्र उनका अनुकरण करते है।
2. विद्यालयों में मूल्य–परक शिक्षा को प्रमुखता देनी चाहिए । साथ ही विद्यालयों में मूल्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा के विविध कार्यक्रम आयोजित किये जाये ताकि विद्यालय में छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके क्योंकि यही छात्र–छात्राऐं हमारे भावी अध्यापक है।
3. पाठ्यक्रम को समय–समय पर संशोधित किया जाये ताकि समयानुसार मूल्यों का संरक्षण किया जा सकें। भारतीय संस्कृति के अध्ययन से सम्बन्धित पाठ्यक्रम शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में लागू करने चाहिए।
4. अध्यापक को अपने विषय–ज्ञान की गंभीरता एवं सदाचरण के द्वारा समाज में ऐसे आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए, ताकि नई पीढ़ी मानवीय मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा में उचित योगदान दे सकें ।
5. विद्यार्थियों के प्रति अध्यापक का व्यवहार उदारता एवं संहिष्णुता का हो। अध्यापक कभी भी उनसे अशिष्ट भाषा में बात न करें । जहाँ तक हो उसकी भाषा स्नेह एवं शिष्टतायुक्त हो।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि हमें एक सुसंस्कृत, शालीन समाज की स्थापना में अपना–अपना योगदान देना चाहिए और इस कार्य में अध्यापकों का विशेष दायित्व है। अध्यापकों द्वारा अपने कार्य के प्रति निष्ठावान एवं ईमानदार होना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार वैयक्तिक मूल्यपरक शिक्षण तभी दे सकता है जब उसमें स्वयं अच्छे मूल्य विकसित होगे। यदि शिक्षक में अच्छे मूल्य विकसित होगे तो छात्र शिक्षक को उदाहरण के रूप में प्रेरणा बना सकता है। हर छात्र का आदर्श उसका शिक्षक ही होता है। वह वही कार्य करने की चेष्ठा करता है जो शिक्षक करता है शिक्षक जिन मूल्यों को छात्रों को देना चाहता है वह स्वयं उसमें भी व्यक्त होने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहलुवालिया, एस0 पी0 एण्ड सिंह, एच0 एल0 (1994) : ''टीचर्स वैल्यू इन्वैन्ट्री,'' प्रकाशक नेशनल साईकौलौजिकल कारपोरेशन, आगरा।
2. चतुर्वेदी, एस. (2012) : ''प्राथमिक स्तरीय अध्यापकों के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन,'' शिक्षा चिन्तन शैक्षिक त्रैमासिकशोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान नोएडा. वर्ष–11 अंक – 42, अप्रैल–जून , 2012, पृ0 12–14.
3. डेविड, वांग (1979) :" वेल्यू एण्ड लिडरशिप करेकटरशिप ऑफ सेवन्थ डे एडवेनटिस्टएकेडमी टीचर्स इन मिशिगन,"डिस,एब्स०वोल्यूम– 40 न० 2
4. मैनी, डी0. (2005) : ''मानव मूल्य – परक शब्दावली का विश्वकोष,,'' खण्ड (पंचम), प्रकाशक प्रभात कुमार शर्मा द्वारा सरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
5. नेलसन, ए. जीन (1971) : ''ए वैल्यू प्रोफाईल फिजिकल एजूकेशन,'' डिजरटेशन एब्सट्रैक्ट, ईस्टर वोल्यूम – 31 (10)

6. सिंह, एम. एवं दूबे, एम. (2010) :''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं के मूल्य प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन,''शिक्षा चिन्तन, शैक्षिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान, नोएडा, वर्ष – 9.अंक–33, जनवरी– मार्च, (2010): पृ026–30.
7. सोनी, आर0. (2013) :'स्नातक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन,''शिक्षा मित्रशोध पत्रिका, दिसम्बर, 2013, 6 (2) पृ0 5–6.
8. सिंह, एस0 एवं कुमार, ए0. (2008) : ''माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के जीवन मूल्यों की तुलना,'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 27, अंक 2, जुलाई – दिसम्बर, पृ0 43–47.